मोहन मालवीय

कला ही बनी ज़िंदगी

गिरिराज अग्रवाल

तमाम प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद कोई कलाकार अपने अंदर की कला को कैसे जीवित रखता है, चित्रकार मोहन मालवीय इसका अनूठा उदाहरण हैं। स्वतंत्र कलाकार के रूप में संघर्ष करने के दिनों में उनके पास न रहने की जगह थी और न कायदे के रंग खरीदने के लिए पैसे। फिर भी उन्होंने अपना कला-सफर जारी रखा और सिरेमिक से लेकर जल रंगों तक में अपनी कल्पनाओं को उकेरा। न्यूयॉर्क की पोलक-क्रेसनर फाउंडेशन ने इस कलाकार की प्रतिभा को पहचाना और उसे अपनी कला को निखारने के लिए बिना किसी शर्त 11 हजार डॉलर का अनुदान दिया। वर्ष 2004 में समय पर मिली इस मदद के बूते मोहन मालवीय पिछले डेढ़ साल में महानगरों सहित पूरे भारत में अपनी कला की 10 से भी ज्यादा प्रदर्शनियां आयोजित कर चुके हैं।

वह कहते हैं, ''एक समय था जब मेरे पास दस रुपये का सस्ता कागज खरीदने के लिए भी पैसे नहीं होते थे। पोलक-क्रेसनर अनुदान के बूते मैंने 10 हजार रुपये तक में आने वाला बढ़िया क्वालिटी का कागज खरीदा। बढ़िया रंग इस्तेमाल किया। इससे मेरे चित्रों में खासा बदलाव आया।''

भोपाल के भारत भवन में रात-रात भर जागकर खड़िया से आकृतियां बनाने के अक्खड़पन के दिनों में भी मोहन ने जगदीश स्वामीनाथन, अखिलेश वर्मा (जिन्हें वह अपना गुरु मानते हैं) और सैयद हैदर रजा जैसे कलाकारों के कामकाज को जानने-समझने में पूरी दिलचस्पी ली। इन्हीं दिनों उन्हें अमेरिकी कलाकार मार्क रोथको और जैक्सन पोलक ने भी खासा प्रभावित किया। उस समय उन्होंने शायद ही सोचा होगा कि इन्हीं पोलक के नाम पर मिलने वाली अनुदान राशि उनके कला जीवन में एक और छलांग लगाने में मदद करेगी।

मोहन का जन्म मध्य प्रदेश के रतनपुर (खरगोन) गांव में हुआ जिसकी आबादी डेढ़ हजार से भी कम है। उनका कलाकार मस्तिष्क कला के नाम पर यहां या तो लोक कला से रूबरू हुआ या फिर प्राकृतिक दृश्यों से। नागपंचमी और गोवर्धन पूजा जैसे धार्मिक अवसरों पर बनाए जाने वाले मांढ़ने उन्हें प्रेरित करते थे। नर्मदा नदी के किनारे विमलेश्वर घाट की मनमोहक चट्टानें भी इस कलाकार को अपनी ओर खींचती थीं। इंदौर के देवलालीकर कला महाविद्यालय में पहली बार उन्होंने कला के विभिन्न पहलुओं की विधिवत शिक्षा ली। यहीं उनका सामना मशहूर चित्रकार मकबूल फिदा हुसैन से हुआ जिन्होंने उनके जहन पर अमिट छाप छोड़ी। इस दौर में उनका काम अर्द्ध-वास्तविक (सेमी रियलिस्टिक) था जिसमें गांव और प्रकृति पर ज्यादा जोर था और रेखाचित्रों और जल रंगों का इस्तेमाल किया गया।

मोहन मालवीय द्वारा बनाया गया चित्र नाद: हाथ से बने कागज पर एक्रिलिक रंगों का अनूठा इस्तेमाल

चित्र: साभार मोहन मालवीय

27 साल की उम्र में वर्ष 1996 में यह कलाकार भारत भवन जा पहुंचा। इस दौरान उन्होंने सिरेमिक पर प्रयोग किए। मिट्टी के लोंदों में अपनी कल्पनाएं उकेरीं। यह संघर्ष का दौर था। मालवीय कहते हैं, ''खेती के काम में मन नहीं लगता था, चित्र बिकते नहीं थे और और नौकरी थी नहीं।'' वह बताते हैं, ''इसी दौरान मैंने इंदौर में दिन-रात लगकर 32 इंच x 42 इंच के कागज पर 150 कलाकृतियां बनाईं। भोपाल में एक शो में इनमें से सौ कलाकृतियां प्रदर्शित की गईं।'' पहली बार उनके चित्र खरीदे गए। दिल्ली के पांचसितारा होटल पार्क की प्रिया पॉल ने उनकी चार कलाकृतियां 18 हजार रुपये में खरीद लीं। मालवीय के अनुसार, ''कलाकार के रूप में मेरे जीवन में यह टर्निंग प्वाइंट था।'' उसके बाद सफलता का सिलसिला शुरू हो गया। वर्ष 2002 में सिल्क रूट फेस्टिवल में राजीव सेठी द्वारा रचित प्रदर्शनी के लिए उन्होंने 102 फुट x 5 फुट के कैनवास पर चित्र उकेरे। उन्होनें कागज और शिलाओं पर भी काम किया। मालवीय के शब्दों में, ''पांच महीने तक एक फार्महाउस में दिन-रात काम करता रहा।'' इसके बदले उन्हें दो से तीन लाख रुपये मिले।

वह कहते हैं, ''दोस्तों के कहने पर पोलक-क्रेसनर फाउंडेशन के लिए चार लाइन का प्रोजेक्ट बनाया कि मैं मेटल पर काम करना चाहता हूं। 8 फुट x 4 फुट के कागज पर चित्र बनाने और सोने और पीतल की कास्टिंग करने की बात कही थी।'' उन्होंने फाउंडेशन को 10 स्लाइडें भेजीं। अपने काम के बारे में राजीव सेठी, राधाकृष्णन और अखिलेश वर्मा जैसे कलाकारों की सिफारिशें भेजीं। इसके बाद उनके पास सीधे पत्र आया कि उन्हें अनुदान के लिए चुन लिया गया है। वह कहते हैं, ''मैं दिल्ली में था लेकिन अनुदान मिलने की खुशी में दोस्तों ने इंदौर में पार्टी कर ली।'' भविष्य के बार में उनका कहना है कि ''मुझे स्वतंत्र कलाकार के रूप में काम करना अच्छा लगता है और हैंडमेड पेपर पर एक्रिलिक रंगों से काम करने में मजा आता है।''

पोलक-क्रेसनर फाउंडेशन अनुदान को मोहन मालवीय संघर्ष कर रहे कलाकारों के लिए 'आशा की किरण' बताते हैं। उनके अनुसार कलाकारों के लिए इस तरह की मदद बड़े मायने रखती है क्योंकि घर वाले अक्सर मदद नहीं करते। अपने कला जीवन के अब तक के उतार-चढ़ाव पर वह कहते हैं, ''जब भी मैं असफल होता हूं तो सोचता हूं कि मुझमें कमी रही होगी और अपने काम में नए सिरे से जुट जाता हूं। मैं इस बात में यकीन करता हूं कि यदि मेरा हृदय पवित्र है तो देर-सबेर मेरे साथ अच्छा ही होगा।''

(पोलक-क्रेसनर फाउंडेशन ने 1985 में अपनी स्थापना के बाद से अब तक भारत सहित 65 देशों के बहुत-से कलाकारों को तीन करोड़ सत्तर लाख डॉलर से ज्यादा की धनराशि अनुदान में दी है। वर्ष 2004 में मोहन मालवीय के अलावा भारत के तीन और कलाकारों को अनुदान मिला है- त्रिवेंद्रम के सुकुमारन प्रदीप, नई दिल्ली के असीम पुरकायस्थ और पश्चिम बंगाल के तन्मय सामंता। फाउंडेशन की वेबसाइट है: www.pkf.org